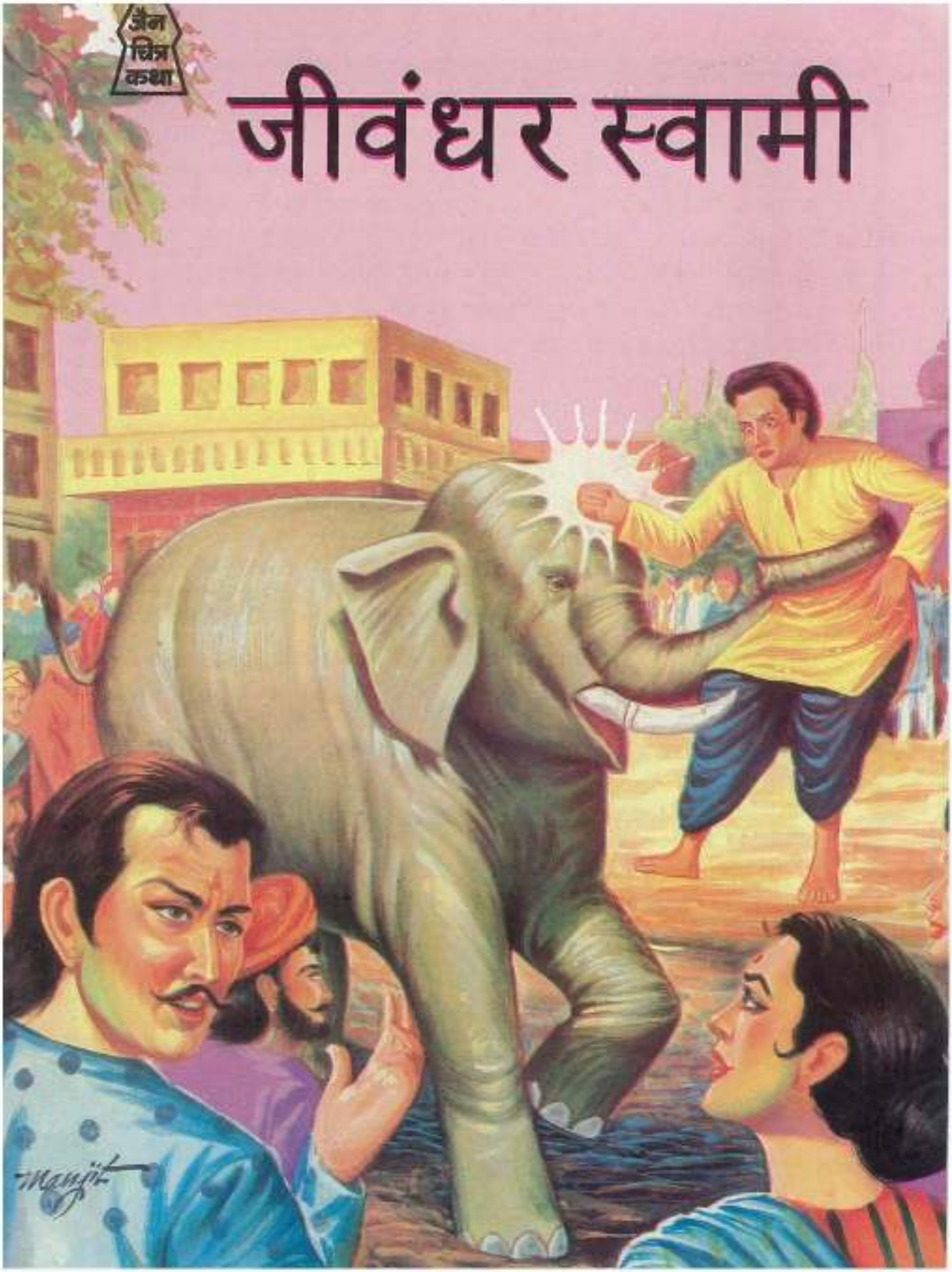
जैन चित्र कथा

जीवंधर स्वामी



सम्पादकीय

जीवंन्धर स्वामी की यह चित्र कथा जीवन को झंकृत करती है कि गर्भवस्था में राज्यपद, जन्म श्मसान भूमि में, बाल अवस्था श्रेष्ठीगृह, युवा अवस्था में दर-दर की ठोकरें तत् पश्चात राज्यपद प्राप्त करना। कितना कठिन संघर्ष मय जीवन। सुख-दुःख मय जीवन इन परिस्थितयों में मानव मोह वस ही तो अपनाता है। जब आत्म ज्ञान होता है तो उसे सद्ज्ञान की प्राप्ति होती है तो वह संसार को छोड़ने का प्रयत्न करता है। जीवंधर स्वामी के जीवन कि यही स्थिती रही कि पिता को मारकर काष्टांगर ने राज्य पद प्राप्त किया तथा काष्टांगर को मार कर जीवंधर ने राज्य पद प्राप्त किया तथा यह जानकर के वैराग हुआ कि छीना झपटी में जीवन व्यतीत हो जाता है। मृत्यु के पूर्व आत्म कल्याण करूँ तथा अन्त में जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर मोक्ष प्राप्त करते हैं।

जैन चित्र कथाऐं

जैन चित्र कथा

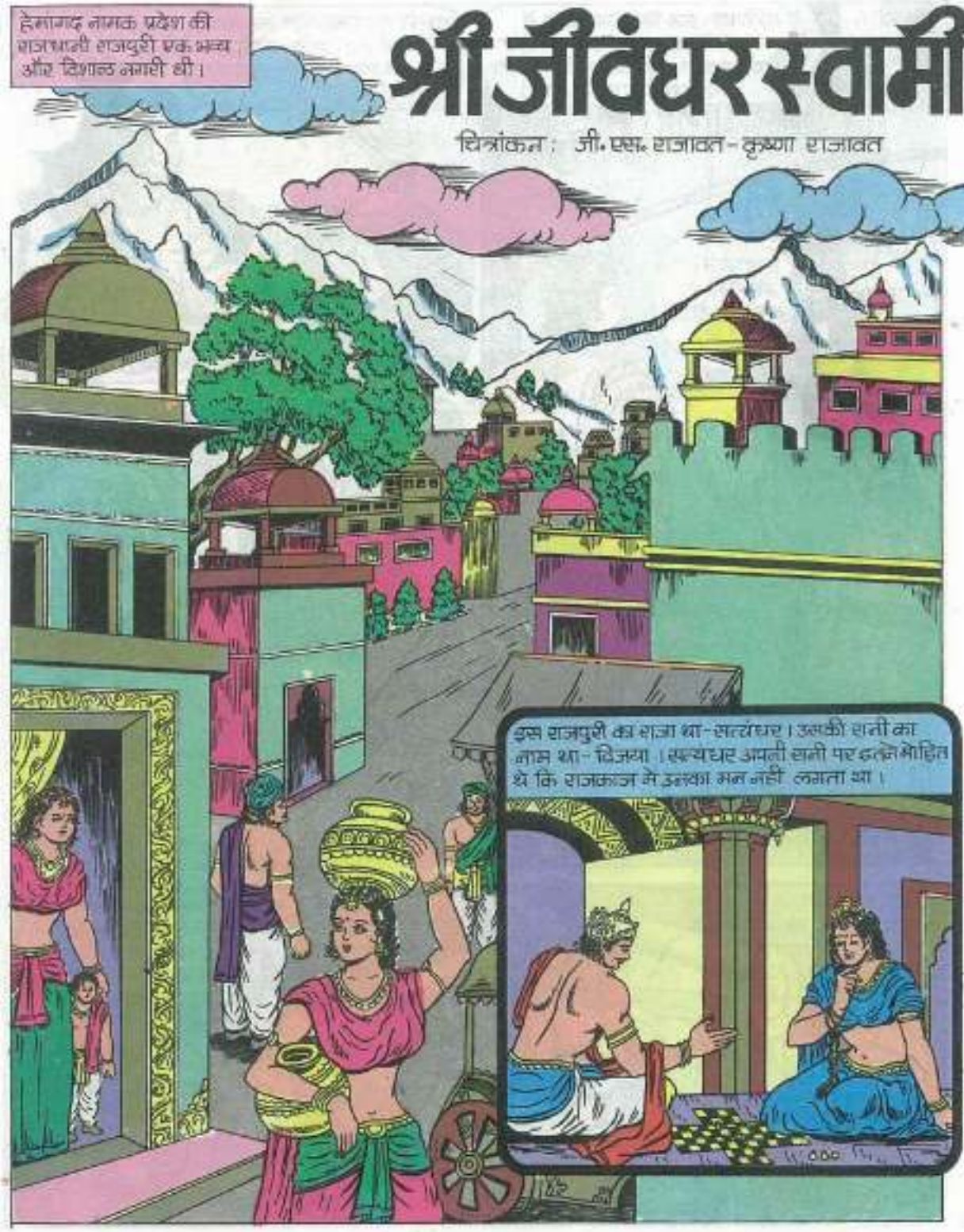
आशीर्वाद

परम पूज्या आर्यिका आदिमति माता जी

प्रकाशक	:	आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला
कृति	:	जीवंधर स्वामी
©	:	सर्वाधिकार सुरक्षित
सम्पादक	:	ब्र. धर्मचन्द शास्त्री प्रतिष्ठाचार्य
शब्दाकन	:	ब्र. धर्मचन्द शास्त्री प्रतिष्ठाचार्य
पुष्प नं	:	42
मूल्य	:	20.00
प्राप्ति स्थान	:	जैन मंदिर गुलाब वाटिका लोनी रोड़ जिला गाजियाबाद (उ.प्र.)
☎	:	914-600074
		S.T.D. 0575-4600074

श्री जीवंधर स्वामी

चित्रांकन : जी. एस. राजावत - कृष्णा राजावत




एक दिन...
हे मंत्रिगण। इन दिनों राजकोष में मेरा मन नहीं लग रहा। अस्तु मैं राजा के अपने समस्त अधिकार रानी कांचनमाला को देकर पट्ट विहार कर रहा हूं।
नहीं, महाराज। आप ऐसा न करें। यह नीति नहीं है।
हमने राजा को बहुत समझाया, किन्तु वह नहीं माने। उन्होंने आज काष्ठागार को राज्य शासन दे ही दिया।
नीतिकार कहते हैं कि जो भावी होती है, मनुष्य की बुद्धि भी वैसी ही हो जाती है।
एक रात्रि को रानी विजया ने तीन स्वप्न देखे।
अगले दिन रानी ने राजा यथादत्त से इन स्वप्नों के अर्थ पूछे।
रानी, मुकुट सहित अशोक वृक्ष का अर्थ है कि तुम्हारे एक सुन्दर पुत्र होगा। आठ मालाओं का अर्थ है कि उस पुत्र के आठ पत्नियां होंगी।

किन्तु महाराज ! आपने पहले स्वप्न का अर्थ नहीं बताया।

वह स्वप्न भविष्य में मेरे अनिष्ट की सूचना देता है।

हे महाराज, यह आपने क्या कहा ? मैं कहां जाऊंगी

दुखी न हो रानी। दुख को छोड़कर धर्म पालन करो जिससे आने वाली विपत्ति दूर हो जाय।

कुछ समय बाद रानी गर्भवती हुई।

मंत्रियों के समझाने पर भी काष्ठांगार नहीं माना और उसने सत्यंधर को मारने के लिए सेना भेज दी।

हे रानी। मैंने मयूर की आकृति का यह विमान आपके लिए बनवाया है। आप इस पर बैठकर उड़ने का अभ्यास कीजिए।

महारानी ! काष्ठांगार की सेना से मैं लिपट जूंगा। आप तत्काल इस विमान से उड़कर कहीं और चली जाइए।

राजा काष्ठांगार का दरबार -

हे मंत्रिगण। एक देव मुझे आकर सता रहा है, और कहता है कि तुम राजा सत्यंधर को मार कर स्वयं राजा बनो। बताइए मैं क्या करूं ?

यह धूर्त स्वयं राजा बना रहने के लिए सोच रहा है और देव का बहाना बना रहा है।

वह मयूर-विमान राजपुरी के श्मशान में गिरा, जहां रानी विजया ने एक पुत्र को जन्म दिया। रानी दुखी होकर सोचने लगी कि इस पुत्र का क्या करूं ? तभी चक्रेश्वरी देवी धाय के वेश में आयी।

हे देवी। इस पुत्र के पालन की चिंता न करो एक व्यक्ति इसे राजकुमारों की तरह पालेगा।

यह सेना तो कभी मेरी ही थी। अपने ही लोगों के अहं-संहार से क्या लाभ ? धिक् है ऐसा राज्य जिसके लिए नरसंहार करना पड़े। मुझे तो सन्यास ले लेना चाहिए।

और इस तरह सत्यधर ने अपराजिता का सल्लेखनापूर्वक शरीर छोड़ दिया।

विजया ने उस शिशु को राजचिन्ह वाली अंगूठी पहनाकर वहीं छोड़ दिया और स्वयं छिप गई। तभी उस नगरी का सेठ मन्धोत्कट वहां अपने शिशु-पुत्र का शव लेकर आया।

तो उस निमित्त ज्ञानी ने ठीक कहा था कि तुम्हें श्मशान में एक सुंदर शिशु मिलेगा ?

मन्धोत्कट उस शिशु को लेकर पत्नी के पास आया।

अरे सुनंदा। तुमने जीवित पुत्र को मरा कैसे कह दिया ? यह लो अपना पुत्र।

अरे। मेरा बच्चा।

रानी विजया पुरुष वेश में स्थित तपस्विनी के आश्रम में आकर रहने लगी।

कुछ समय बाद सुनंदा के एक और पुत्र हुआ। उसका नाम रखा - नन्दाढ्य। पहले पुत्र का नाम रखा था- जीवन्धर। वह तब पाँच वर्ष का था- उसका विद्या संस्कार किया गया।

गुरु आर्यनन्दी महाराज के यहां शिक्षा पाकर जीवंधर बड़ा हुआ। एक दिन...

जीवंधर। पूर्वजन्म में तुमने मुझे आहार देकर मेरा कष्ट दूर किया था। इसलिए इस जन्म में मैंने तुम्हें शिक्षा दान दिया है। तुम वास्तव में राजा सत्यंधर के पुत्र हो। राजा काष्ठांगार ने तुम्हारे पिता को मार डाला है।

तो मैं उससे अवश्य बदला लूंगा।

नहीं जीवंधर। अभी तुम वयस्क नहीं हो। मुझे वचन दो कि एक वर्ष तक तुम उससे युद्ध नहीं करोगे।

मैं वचन देता हूं।

एक दिन...

महाराज। हम ग्वालों की सभी गौएं भीलों ने छीन ली हैं। हम तो लुट गए महाराज। हमारा पशुधन वापस दिलवाइए।

चिंता न करो। मैं अभी सेना भेजकर तुम्हारा पशुधन मुक्त कराता हूं।

लेकिन सेना उन भीलों को न हरा सकी और खाली हाथ लौट आयी। तब ग्वालों के चमुख नन्द गोप ने घोषणा की। जिसे जीवंधर ने भी सुना।

जो व्यक्ति भीलों से हमारा गो-धन छुड़ा लायेगा, उसे सुवर्ण की सात पुतलियां दहेज में देकर अपनी पुत्री गोविन्दा भी ब्याह दूंगा।

राजपुरी का श्रीदत्त नामक व्यापारी धन कमाने विदेश गया था। लौटते समय उसकी नौका तूफान में फंसकर टूट गयी। श्रीदत्त एक लकड़ी के सहारे तैरकर किनारे लगा।

हे श्रीदत्त तुम्हारी करुण कथा सुनकर मुझे भी दुख है। आओ मेरे साथ। सब ठीक हो जाएगा। हम विजयार्ध पर्वत पर चलें।

जीवंधर तुरंत वन में गए और भीलों को पराजित करके गोधन छुड़ा लाए।

जीवंधर कुमार की जय।

मुझे आपका पुरस्कार नहीं चाहिए। पुत्री गोविन्दा का ब्याह मेरे उत्तम मित्र पद्मास्य से कर दीजिए।

हे भद्र पुरुष! आप मुझे इस पर्वत पर क्यों लाए हैं?

मैं धर नामक विद्याधर हूं। आपके मित्र राजा गरुडवेग मेरे स्वामी हैं। उन्हें अपनी कन्या के विवाह के सम्बन्ध में आपकी जरूरत है। मैं आपको लेने आया हूं। आप चिंता न करें आपकी नौका, धन आदि सब सुरक्षित है। वह घटना केवल एक मायाजाल थी। आइए चलें।


राज के पास पहुचने पर ...
हे मित्र। पंडितों ने कहा है मेरी पुत्री गंधर्वदत्ता का विवाह उसी से होगा जो इसे वीणावादन में हराएगा। इसलिए आप इसका स्वयंवर रचाने के लिए इसे राजपुरी ले जाइए।
राजपुरी आकर भद्रदत्त ने गंधर्वदत्ता के विवाह के लिए स्वयंवर रचा। अनेक वीणावादक आए और उन्हे गंधर्वदत्ता ने पराजित कर दिया।


तब जीवंधर कुमार अपनी घोषवती वीणा लेकर आए और उन्होंने अपने वीणावादन से गंधर्वदत्ता को पराजित किया। गंधर्वदत्ता ने वरमाला जीवंधर कुमार के गले मे डाल दी।
जीवंधर कुमार की विजय, स्वयंवर में बैठे राजागण सहन ना कर सके। वहा उपस्थित कोष्ठागार ने उन्हें भड़का दिया और वे जीवंधर से युद्ध करने लगे।
अंत में जीवंधर कुमार विजयी हुआ और गंधर्वदत्ता से उसका विवाह हो गया।

एक बार वसंत ऋतु आने पर जीवंधर जल-क्रीड़ा के लिए अपने मित्रों के साथ गए। वहां हवन सामग्री चुरी कर देने के कारण ब्राह्मणों ने एक कुत्ते को मार-मारकर घायल कर दिया था।





वहीं दो सहेलियां झगड़ रही थीं।



गुणमाला तब दुखी थी कि काष्ठांगार उधर आ गया। उसके परिजन उसे अकेला छोड़कर भाग गए।

अपने परिजनों के साथ घर की ओर लौट का पागल हाथी

तभी जीवंधरकुमार ने आकर उस हाथी को मुष्टिका प्रहार से भगा दिया।

गुणमाला और जीवंधरकुमार में इस घटना के बाद प्रेम हो गया।

जीवंधर द्वारा मार खाने के बाद उस हाथी ने खाना-पीना छोड़ दिया। यह बात काष्ठांगार तक पहुंची।

डरने की कोई बात नहीं। अतिथि आपको घर छोड़ आऊं।

आज आपने मेरी रक्षा की है।

और जीवंधर तथा गुणमाला विवाह-बंधन में बंध गए।

इस दुष्ट जीवंधर से मुझे और भी हिसाब चुकाना है। उसे तुरंत पकड़कर ले आओ। आवश्यक हो तो सेना ले जाओ।



और सेनापति, जीवंधर के हाथ बांधकर काष्ठांगार के दरबार में ले आया।



यक्षेन्द्र तत्काल आया और अपनी मायावी शक्ति से जीवंधर कुमार को वहां से अदृश्य बनाकर उठा ले गया। उधर जीवंधर के माता-पिता और जनता इस समाचार से दुखी हो उठे।



वह यक्षेन्द्र जीवंधर कुमार को चन्द्रोदय पर्वत पर अपने घर ले गया और वहां उनका अभिषेक किया।



मैं अब देश भ्रमण के लिए जाना चाहता हूं।

आप देश भ्रमण करना चाहते हैं तो सहर्ष जाइए। मैं आपको वहां ले जाने का मार्ग बताता हूं।

जीवंधर कुमार अकेले घूमते हुए एक वन में पहुंचे जहां आग लगी थी और उसके बीच हाथियों का समूह फंसा हुआ था। जीवंधर ने सोचा - दया ही धर्म का मूल है, इसलिए इन्हें बचाना चाहिए। इतना सोचते ही आकाश से बादल जल वर्षा करने लगे और हाथी बच गए।

आगे चलकर जीवंधर कुमार चंद्राभा नगरी में आए।

अरे! तुम्हें नहीं मालूम? इस नगरी के राजा धनपति की सुपुत्री पद्मा को सर्प ने काट लिया है। कोई उपचार अपना प्रभाव नहीं दिखा रहा है।

चलो। मैं उपचार करूंगा। मुझे वहां ले चलो।

जीवंधर कुमार ने जाकर विषनाशक मंत्र से राजकुमारी पद्मा को ठीक कर दिया।

हे भद्र। मेरा नाम लोकपाल है। मेरी बहन को आपके उपचार से नया जीवन मिला है. मैं आपका सम्मान करता हूं।

तुम मुझे हर प्रकार से पद्मा के लिए योग्य वर लगते हो। मैं तुम्हारे साथ उसका विवाह करना चाहता हूं।

और फिर जीवंधर कुमार का विवाह राजकुमारी पद्मा से हो गया।

कुछ समय राजकुमारी पद्मा के साथ बिताने के बाद जीवंधर कुमार वहां से चल दिए, किंतु किसी को बताया नहीं। लोकपाल ने उन्हें खोजने के लिए दूत भेजे।

युवराज! हमने बहुत खोजा, दूर-दूर तक जाकर देखा, किंतु कुमार का कुछ भी पता न चला।

जीवंधर स्वामी यात्रा करते हुए पल्लव देश में स्थित गिरिकूट पर्वत पर स्थित साधुओं के मठ में पहुंचे जहां वे पंचाग्नि तप कर रहे थे।

हे तपस्वियो! जिसमें जीवों को क्लेश न हो वही श्रेष्ठ तप है। सम्यक्ज्ञान, सम्यक्दर्शन और सम्यक् चरित्र तीनों ही साक्षात मुक्ति के उपाय हैं।

हे स्वामी! आप जो भी हो। आपने जो ज्ञान हमें दिया है, उसे ग्रहण करके हम धन्य हो गए। हम आज से जिनधर्म स्वीकार करते हैं।

इसके बाद जीवंधर कुमार दक्षिण की ओर गए, जहां एक जिनालय के कपाट बन्द थे। जीवंधर कुमार ने वहीं खड़े होकर स्तुति की तो वे कपाट अपने आप खुल गए।

जिस महापुरुष के आने पर इस जिनालय के कपाट खुलें, उसे देखने के लिए सुमद्र नामक सेठ ने गुणभद्र नामक नौकर वहां नियुक्त किया था।

सेठ सुमद्र तुरन्त आया और अद्दत सहित जीवंधर को अपने घर ले गया। फिर जीवंधर की स्वीकृति लेकर द्योमश्री का विवाह उसके साथ कर दिया।

हे स्वामी! मैं सेठ सुमद्र का नौकर हूं। किसी निमित्त ज्ञानी ने कहा था कि सेठ-पुत्री द्योमश्री का विवाह उस महापुरुष से होगा जिसके आने से जिनालय के कपाट खुलेंगे। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि आप सेठ सुमद्र के घर चलने के लिए तैयार हो। मैं उन्हें लेकर अभी आता हूं।

बहुत दिनों तक क्षेमश्री के साथ सुख भोगकर जीवंधर कुमार द्योमपुरी नगरी से किसी को सूचना दिए बिना ही चल दिए।

जीवंधर कुमार जिन आभूषणों को पहनकर आए थे, उन्हें त्यागने का विचार उन्होंने किया। उसी समय एक किसान उनके पास आया।

हे किसान! तुम कहां से आए हो, कहां जा रहे हो और तुम्हें किसी बात का दुख तो नहीं है?

हे पूज्य! आप महान हैं। क्योंकि आपने मेरे विषय में जिज्ञासा की है?

कहां चले गए मेरे स्वामी। मुझसे कहकर तो जाते। पिताजी, उन्हें खोजिए।

बेटी! मैंने थोड़ी दिशाओं में खोज की है। किन्तु उनका कहीं पता नहीं मिला।

हे स्वामी ! मैं खेती करता हूं और सपरिवार खुशी हूं ।

हे किसान ! खेती आदि से प्राप्त सुख तो नश्वर है। सच्चा सुख तो मोक्ष प्राप्त होने पर ही प्राप्त हो सकता है।

आत्मा का उत्तम सुख सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक् चारित्र के पूर्ण होने पर ही मिलता है। इसलिए हे कृषक ! तू नश्वर वस्तुओं का मोह त्यागकर आत्मा का सुख प्राप्त कर। गृहस्थ धर्म को स्वीकार करके भी यह सुख किंचित प्राप्त हो सकता है। ऐसे लोग व्रत धारण करते हैं और श्रावक कहलाते हैं।

जीवंधर स्वामी के इन उपदेशों को सुनकर कृषक ने गृहस्थ धर्म स्वीकार कर लिया।

तब जीवंधर स्वामी ने उसे अपने समस्त आभूषण तथा मूल्यवान वस्त्र दान में दे दिए।

आगे चल कर जीवंधर कुमार एक उपवन में पहुंचे, जिसके वृक्ष फलों से लदे थे। वहां एक राजकुमार धनुष-बाण से आम का एक भी फल नहीं गिरा सका था। किंतु जीवंधर कुमार ने एक ही बाण से उस फल को गिरा दिया।

हे धनुर्धारी महापुरुष ! मैं और मेरे ये भाई, हेमाभ नगरी के राजा दृढ़मित्र के पुत्र हैं। हम सब शूरवीर हैं। हमारे पिता हमें शिक्षा देने के लिए एक धनुर्धारी की खोज कर रहे हैं। क्या आप उनसे मिलने का कष्ट करेंगे ?

जीवधर कुमार ने उन राजकुमारों को बड़ी ही लगन से शिक्षा दी, जिससे वे गुरु के समान विद्वान हो गए।

हे जीवधर कुमार! आपने मेरे राजकुमारों को शिक्षा देकर जो उपकार किया है, उसके बदले मैं अपनी कन्या का विवाह आपसे करना चाहता हूं।

महाराज दृढ़मित्र! आप की आज्ञा मुझे स्वीकार है।

जीवधर कुमार तुरंत ही आयुधशाला पहुंचे। वहां सचमुच नन्दाढ्य से भेंट हो गई। दोनों भाई मिलकर अत्यंत प्रसन्न हुए।

हे बंधु तुम यहां कैसे आए?

राजकुमारी कनकमाला से विवाह के पश्चात् जीवधर कुमार एक वर्ष तक हेमाभा नगरी में रहे। एक दिन एक सुन्दर स्त्री उनके पास आई।

हे भद्र पुरुष! यह कैसी विचित्र बात है कि मैंने आपको यहां और आयुधशाला में- एक ही समय में दोनों स्थानों पर देखा है।

इसका अभिप्राय कहीं नंदाढ्य से तो नहीं है? संभव है वह यहां आ गया हो?

हे अग्रज! मैं आपके वियोग में दुखी रहता था। एक दिन मामी गंधर्वदत्ता के पास गया। उन्होंने कहा- दुखी मत हो, तुम्हारे भाई अत्यंत सुख पूर्वक हैं। तुम कहो तो मैं तुम्हें अपनी विद्या से उनके पास पहुंचा दूं? और इस तरह उन्होंने मुझे यहां भेज दिया। उन्होंने आपके लिए पत्र भी दिया है।

पत्र में लिखा था- हे स्वामी। आपके वियोग का दुख अब नहीं सहा जाता। गुणमाला का यह निवेदन आप स्वीकार करें।

गांधर्वदत्ता ने कितनी कुशलता से अपना दुख, गुणमाला का नाम लेकर व्यक्त किया है।

एक दिन राजा दृढ़मित्र के महल के सामने, नगर के ग्वाले आकर रोने लगे।

हे महाराज। चोरों ने हमारे गोधन को चुरा लिया है। हम तो लुट गए महाराज अब हम क्या करें?

ठीक है। तुम लोग चिंता न करो। मैं उन चोरों से तुम्हारा गोधन वापस लाकर दूंगा।

जीवंधर कुमार ने राजा दृढ़मित्र को सेवक दिया और स्वयं चोरों से भिड़ने चले। किंतु जब वे वन में पहुंचे तो चोरों को देखकर चकित रह गए।

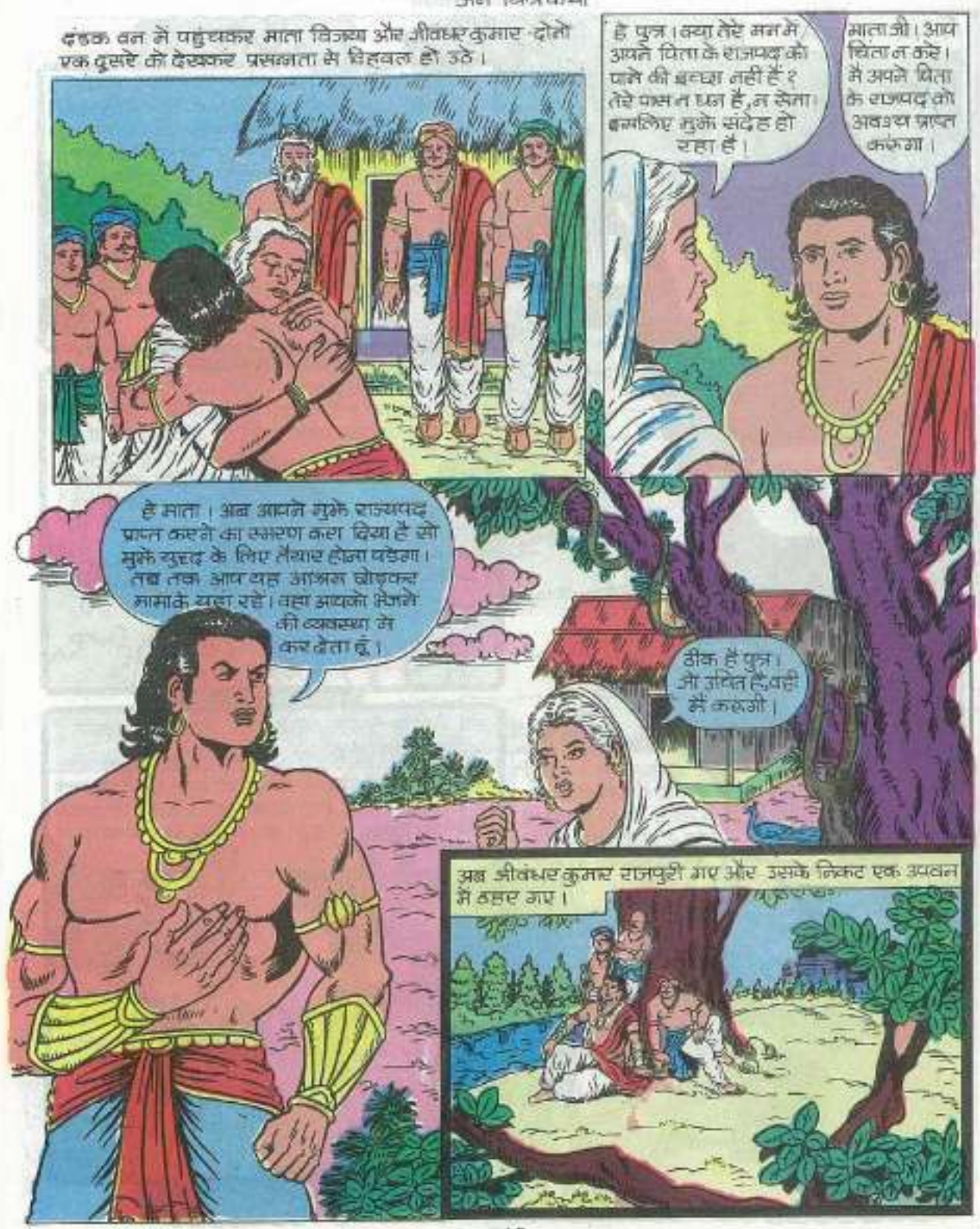
आश्चर्य है। मेरे ही सेवक, बंधु बांधव, ये चोर हैं जो गोधन ले आए हैं? ये सब राजपुरी से चला करते आए हैं।

हे कुमार। गोधन चुराना तो केवल आपको यहां बुलाने का बहाना था। हम तो आपसे भेलने आए हैं। हमें गोधन नहीं चाहिए।

अपने मित्रों और सेवकों से मिलकर जीवंधर कुमार को अत्यंत प्रसन्नता हुई।

हे स्वामी। हम तो आपके वियोग में मृतप्राय हो चुके थे। किंतु देवी गांधर्वदत्ता ने मार्ग बताया और हम अनेक वनों में भटकते हुए यहां आ पहुंचे हैं। हमने एक वन में तपस्वियों के आश्रम में एक माता को देखा।


तपस्वी - आश्रम में ...
यह सुनते ही वह माता मूर्छित हो गयी। फिर हमसे यह सुनकर कि जीवंधर कुमार जीवित है... वह माता चेतना में आ गयी और विलाप करने लगी।
तुम लोग कौन हो ? कहां से आए हो ?
फिर उस माता से आपका चरित्र सुनकर हमें विश्वास हो गया कि आपको अपना राज्य अवश्य मिल जाएगा।
इसका अर्थ है कि मेरी माता जीवित हैं। मैं भी कैसा अभागा हूं कि उन्हें मृत समझ कर मैंने उनकी खोज तक न की। हे मां! तुम कहां हो ?
अब जीवंधर कुमार माता के दर्शन शीघ्रातिशीघ्र करने के लिए व्याकुल हो उठे।
हे कनकमाला, कितने हर्ष का विषय है कि जिस माता को मैंने जन्म को ही नहीं देखा, वह जीवित है। मैं आपके दर्शन करने आ रहा हूं। मैं इसी क्षण प्रस्थान कर रहा हूं।
हे माता ! हम राजपुरी से आए हैं। हम जीवंधर कुमार के सेवक हैं। हमारे दुष्ट राजा काष्ठांगार ने तो जीवंधर कुमार को मारने के लिए ...
आप माता के दर्शनों के लिए अवश्य आएं महाराज।


दंडक वन में पहुंचकर माता विजया और जीवंधर कुमार दोनों एक दूसरे को देखकर प्रसन्नता से विह्वल हो उठे।
हे पुत्र। क्या तेरे मन में अपने पिता के राज्यपद को पाने की इच्छा नहीं है? तेरे पास न धन है, न सेना। इसलिए मुझे संदेह हो रहा है।
माता जी। आप चिंता न करें। मैं अपने पिता के राज्यपद को अवश्य प्राप्त करूंगा।
हे माता। अब आपने मुझे राज्यपद प्राप्त करने का स्मरण करा दिया है सो मुझे युद्ध के लिए तैयार होना पड़ेगा। तब तक आप यह आश्रम छोड़कर मामा के यहां रहें। वहां आपके रहने की व्यवस्था मैं कर देता हूं।
ठीक है पुत्र। जो उचित है, वही मैं करूंगी।
अब जीवंधर कुमार राजपुरी गए और उसके निकट एक उपवन में ठहर गए।

एक दिन जीवंधर कुमार राजपुरी नगरी में घूम रहे थे कि एक गेंद ऊपर से उनके पैरों पर आकर गिरी। ऊपर देखा तो उस गेंद को खेलने वाली एक सुंदर कन्या खड़ी थी। जीवंधर कुमार उसे देखते ही उस पर मोहित हो गए।

जीवंधर कुमार उस महल के अंदर गये और ऊपर चढ़ गए।

हे भद्र पुरुष। आपका स्वागत है। मैं सेठ सागरदत्त हूं। और यह मेरी पुत्री विमला है। आज मेरे बहुत से आभूषण जो बिक्री के लिए रखे हुए थे- बिक गए। यह आपके पुण्य प्रताप से हुआ है। अस्तु मैं आपके साथ अपनी पुत्री का विवाह करना चाहता हूं।

जीवंधर कुमार ने विमला से विवाह किया किंतु वहां अधिक समय न रहकर अपने मित्रों के पास उद्यान में आ गए।

दुर्विनय। तू मुझे चुनौती दे रहा है? अरे दुर्मुख। मैं वह भी करके दिखा दूंगा।

जानते हो? सुरमंजरी ने अपने महल के चारों ओर वीर सैनिकों का पहरा लगा रखा है। तुम वहां जा ही नहीं सकते। विवाह क्या करोगे?

लगता है, कुमार ने किसी सुंदरी से विवाह किया है। बधाई हो।

ऐसे तो कोई कितनी ही लड़कियों से विवाह कर ले। उससे क्या होता है? मैं तो तब मानूं जब वे सुरमंजरी से विवाह कर के दिखाए। उसने प्रतिज्ञा कर रखी है कि वह किसी पुरुष को देखेगी भी नहीं।

जीवधर कुमार ने धनेन्द्र द्वारा दी हुई विद्या - 'कालरूप' का स्मरण करके अपना वृद्ध रूप बनाया और सुरमंजरी के महल पर जा पहुंचा।

ऐ! बुढ्ढे! यहां क्या लेने आया है?

मैं कुमारीतीर्थ खोजने निकला हूं।

कुमारीतीर्थ? हा-हा-हा-हा-हा-हा... सूर्ख है... जाने दो... अभी लौट आएगा... इस नाम का तीर्थ भला यहां कहां?

हां... हां... सुरमंजरी को इससे भला क्या डर? बेचारा बुद्धू उसकी डांट खाकर लौट आएगा।

और वृद्ध वेशधारी जीवधर, सुरमंजरी के पास पहुंच गया। सुरमंजरी ने उसका स्वागत किया और उसे भोजन कराया।

भोजन कराने के बाद...

हे महापुरुष! आप मुझे ज्ञानी लगते हैं। कृपया बताएं कि मेरा मनोरथ कब सिद्ध होगा?

यदि तुम मंदिर चलकर कामदेव की पूजा करो तो तुम्हारा मनोरथ शीघ्र ही पूरा होगा। मेरे साथ चलो, मैं वह पूजा करा दूंगा।

सुरमंजरी पूजा के लिए तैयार हुई और वृद्ध बने जीवंधर के साथ मंदिर गई।





और सुरमंजरी ने जैसे ही पलटकर उस वृद्ध को देखा तो जीवंधर असली रूप में आकर मुस्करा रहे थे।



इसके बाद सुरमंजरी के पिता कुबेरदत्त ने उन दोनों का बड़ी धूमधाम से विवाह कर दिया।



विवाह के बाद जीवंधर कुमार अपने मित्रों के साथ पिता गंधोत्कट के पास आकर रहने लगे।

हे पुत्र! तुम काष्ठांगार के चंगुल से बच निकले और सुरक्षित हो, यह देखकर मुझे परम आनंद हो रहा है।

किंतु अब मैं शांत न बैठूंगा। मैं राज्य वापस लेने के लिए सेना आदि की व्यवस्था करने जा रहा हूं। यह बात गुप्त रहे।

राजपुरी नगरी से चलकर जीवंधर कुमार अपने मामा राजा गोविन्दराज के राज्य विदेह नगर में पहुंचे।

आओ भांजे, जीवंधर! तुम्हारा स्वागत है।

मैं अपने पिता का खोया हुआ राज्य वापस लेना चाहता हूं और काष्ठांगार को उसके किए की सजा दूंगा, इस काम में मैं आपकी सहायता चाहता हूं।

मैं हर तरह से तुम्हारी सहायता करूंगा।

उधर गुप्तचरों ने काष्ठांगार को सूचना दी कि राजा गोविन्दराज को विश्वास हो गया है कि महाराज सत्यंधर का वध उसने किया है। इसका बदला लेने के लिए वह आप पर चढ़ाई करने वाले हैं।

इस समय मुझे कूटनीति से काम लेना होगा। सबसे पहले पत्र लिखकर गोविन्दराज के सामने स्थिति स्पष्ट कर देनी चाहिए।

काष्ठांगार का पत्र गोविन्दराज को मिला तो उन्होंने मंत्रियों के साथ विचार किया।

मंत्रिगण। काष्ठांगार ने इस पत्र में लिखा है कि वसन्त में महाराज सत्यंधर को बागीचे में क्रीड़ा करते समय एक मदोन्मत्त हाथी ने मारा है। यह तो मेरा दुर्भाग्य है कि उनकी हत्या करने का कलंक मेरे माथे पर लगाया जा रहा है। आप तो विचारवान व्यक्ति हैं, अस्तु इस गलत प्रचार को आप स्वीकार न करें। महापुरुषों के सत्संग से अपयश शीघ्र नष्ट हो जाता है। अस्तु आप मेरे अतिथि बनकर पधारें। मैं हर तरह से आपका स्वागत करूंगा।

महाराज। काष्ठांगार ने झूठ लिखा है कि सत्यंधर महाराज की हत्या हाथी ने की है। साथ ही आपको अतिथि बनाकर बुलाने के पीछे भी कोई चाल है।

आप ठीक कहते हैं, मंत्रिवर! मैं इस दुष्ट से मित्रता करने की बजाय युद्ध ही करना उचित समझता हूं।

फिर भी, जिस छल से उसने बुलाया है, मैं भी उसी छल से राजपुरी जाऊंगा। मेरी सेना मेरे पीछे-पीछे थोड़ी दूर पर रहेगी। बल में उसे संदेश भेजता हूं कि एक मित्र के निमंत्रण पर मैं राजपुरी आ रहा हूं।

अगले दिन पूरे नगर में ढिंढोरा पीटा गया ताकि काष्ठांगार तक शीघ्र समाचार पहुंच जाय।

सुनो-सुनो-सुनो। महाराज गोविन्दराज और राजा काष्ठांगार में मित्रता हो गई है। दोनों मित्र शीघ्र ही राजपुरी में मिलने वाले हैं।

अपने शत्रु को अत्यंत शक्तिशाली मानकर राजा गोविन्दराज विशाल सेना लेकर चले और राजपुरी से बाहर एक उपवन में ठहर गए।



फिर दोनों ओर से दूत भेजे गए जो भेंट आदि लेकर गए और एक दूसरे के राजा के प्रति सम्मान प्रकट किया।







अनेक राजा आए, किंतु वह बंदक यन्त्र न भेद सके।




अंत में जीवंधर ने आकर यंत्रक यंत्र भेद दिया।
हे राजाओ! इस यंत्रक यंत्र को भेदने वाले जीवंधर कुमार राजपुरी के पूर्व राजा सत्यंधर के सुपुत्र हैं।
आपने ठीक कहा। इस महापुरुष को देख कर ही हमइस की उच्चकुलीनता को समझ गए थे।


इस सत्य को जानकर काष्ठांगार को मानो लकवा मार गया।
मैंने तो इसे मृत्युदंड दिया था। पर लगता है, मृत्युदंड देने वालों ने इसे जीवित ही छोड़ दिया था। यदि मुझे पता चल जाता तो मैं इसे कभी न छोड़ता।
यदि सचमुच ही यह सत्यंधर का पुत्र है तब तो मुझे अपने को मरा हुआ समझना चाहिए। इसके होते हुए अब मेरा राज्य करना असंभव है।

यह जीवंधर इतना वीर है कि यह अकेले ही मुझे राज्य से हटा देगा। फिर इसे गोविन्दराज की सहायता भी प्राप्त है। इसलिए मेरे अब विपत्ति के दिन आ गए।

लेकिन जीवंधर के मित्रों ने ललकार करके काष्ठांगार को चिढ़ा दिया। इससे उसकी क्रोधाग्नि भड़क उठी। वह युद्ध के लिए तैयार हो गया।

यह जीवंधर अपने को बड़ा वीर कहता है - पर मैं नहीं मानता। यह सब झूठ है। अगर ये सचमुच वीर हैं तो युद्ध भूमि में आकर निपट लें।

और तब युद्ध आरंभ हो गया। कुछ छोटे-छोटे राजा काष्ठांगार की सहायता के लिए आ गए। दोनों ओर की सेनाओं में युद्ध शुरू हो गया।

कुछ ही देर के युद्ध के पश्चात् जीवंधर ने काष्ठांगार को यमलोक पहुंचा दिया।


अब जीवंधर कुमार राज्याभिषिक्त होने के लिए जिन मंदिर गए।


इसके बाद अभिषेक मण्डप में राजा गोविन्दराज आदि ने जीवंधर कुमार का अभिषेक किया।


इसके बाद जीवंधर कुमार ने सब लोगों को यथायोग्य दान-मान दिया।


महाराज जीवंधर की जय हो। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि हमारे सुख के दिन फिर लौट आए।
जीवंधर के राज्य में जैसा सुख है, वैसा पहले कभी नहीं रहा।







कुछ समय पश्चात जीवधर कुमार ने, गोविन्दराज की पुत्री लक्ष्मणा से विवाह किया ।



जीवंधर कुमार ने अपने पद्मास्य आदि अनेक मित्रों तथा राजाओं को भी 'महामात्य' आदि पदों से विभूषित किया।

इस प्रकार जीवंधर कुमार सुख-शांति एवं न्यायपूर्वक शासन करने लगे।

एक दिन विजयामाता ने सोचा।

मैंने जीते जी अपने सुपुत्र जीवंधर कुमार को राजा बनते हुए देख लिया है। जिन पद्मास्य आदि ने मेरा उपकार किया उनको भी यथायोग्य पद मिल गए। इस प्रकार मैं सर्वथा निश्चिंत हूं।

उनके मन में वैराग्य-भावना आ गयी।

इसलिए अब मुझे पुत्र-प्रेम का परित्याग कर तपश्चर्या करनी चाहिए।

तब सेठ गन्धोत्कट और सुनन्दा माता विजया के पास आए।

हे महारानी! आपने शुभाशुभ कर्मफल से मुक्त होने का जो निर्णय लिया है। वह अत्यंत वंदनीय है।

आपके इस निर्णय का अनुकरण हम देवरानी भी करेंगे - क्योंकि हमें भी अब इस संसार के प्रति कोई रुचि नहीं है।

इस प्रकार विजया, सुनन्दा और सेठ गंधोत्कट - तीनों ने दीक्षा ले ली।

जीवंधर कुमार का मन इस निर्णय से दुखी था - क्योंकि उनके तीनों प्रियजन उनसे अलग हो रहे थे। तब पद्मा नामक आर्यिका ने उन्हें समझाया।

हे राजन्, जिस प्रकार अपने आप आकाश से हो रही रत्नवर्षा को कोई नहीं रोकता, उसी प्रकार जिन-दीक्षा ग्रहण करने में कोई विवेकी मनुष्य दुखी नहीं होता।

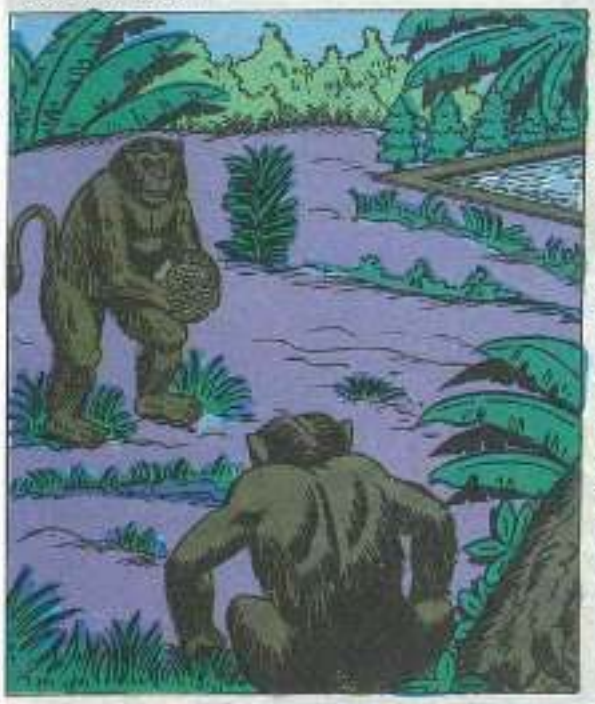
एक दिन जीवंधर कुमार अपनी आठो रानियों के साथ जलक्रीड़ा के लिए गए।

इस प्रकार जीवंधर कुमार शांत होकर शासन करने लगे।

वहां जीवंधर कुमार ने बंदरों के एक समूह में देखा कि एक बंदर अपनी पत्नी को छोड़कर दूसरी बंदरी के साथ क्रीड़ा करने लगा। इससे उसकी पत्नी बंदरी नाराज हो गई। वह बंदर उसे आकर मनाने लगा किंतु सफल न हुआ।

बंदरी के न मानने पर वह बंदर मरे हुए के समान बन कर लेट गया। तब वह बंदरी उस बंदर को मरा समझ कर उसकी खुशामद करने लगी।

तब उस बंदर ने प्रसन्न होकर बंदरी को कटहल का एक फल दिया।



लेकिन तभी माली आया और उसने डंडा मारकर कटहल का फल छीन लिया।



यह देखकर जीवंधर महाराज को वैराग्य हो गया।

जिस प्रकार इस बंदर ने कटहल का फल तोड़कर बानरी को दिया और फिर माली ने डंडा मारकर छीन लिया, इसी प्रकार मेरे पिता ने जो राज्य काष्ठांगार को दिया था, वह मैंने वापस छीन लिया है। अतः मुझे यह राज्य छोड़ देना चाहिए।



जब मैं अनेक शुभाशुभ कर्मों का भोक्ता हूं, उनका नाशक भी हूं तो मुझे कर्मों को छोड़कर मुक्ति प्राप्ति की चेष्टा करनी चाहिए।



महाराज जीवंधर विचार करते हुए, जलक्रीड़ा से लौटे और जिनालय में आकर जिनेन्द्र भगवान की पूजा की।

फिर वहां किसी ऋद्धिधारक मुनिराज से धर्मोपदेश सुना।

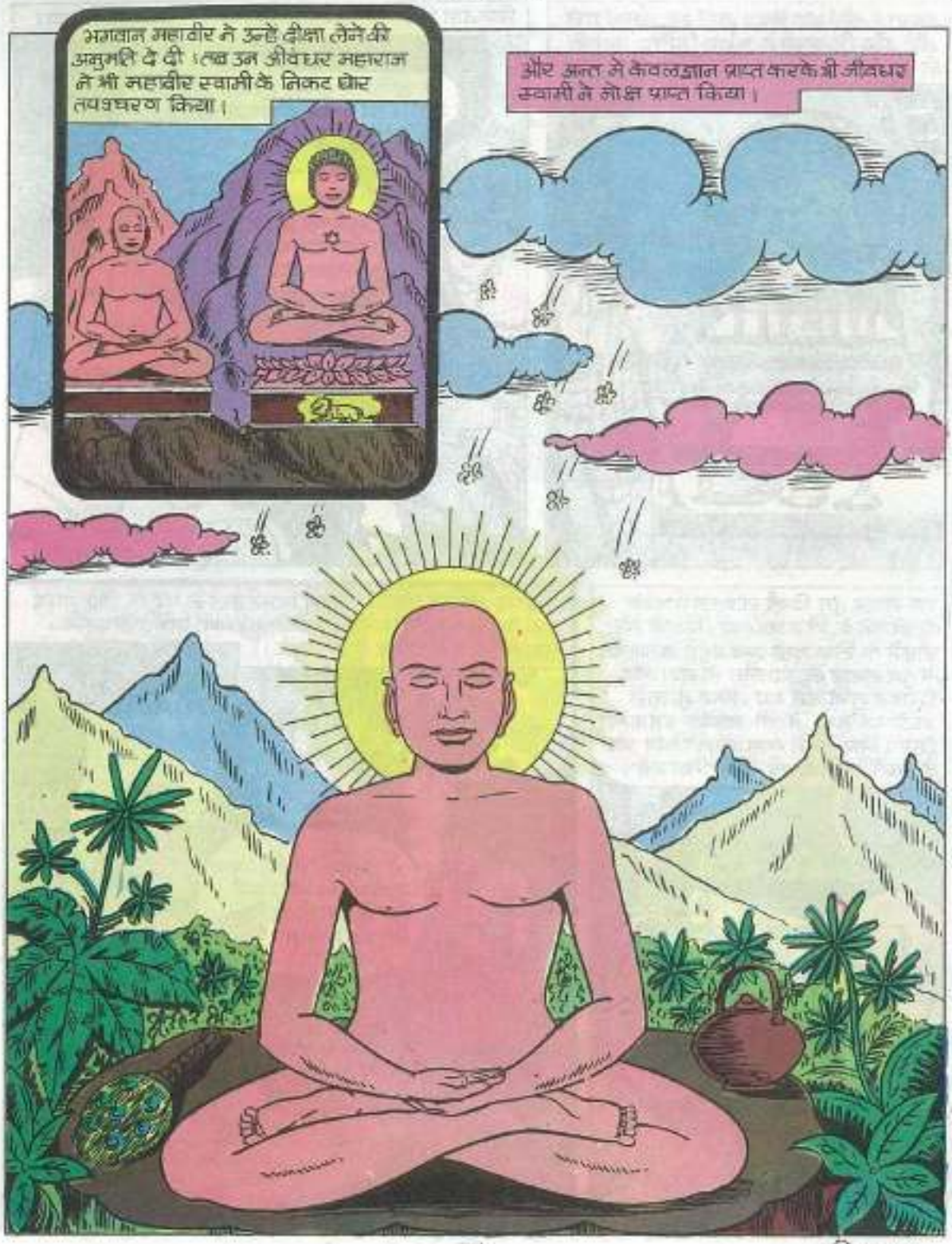
हे मुनिराज कृपया मुझे मेरे पूर्वभव के बारे में बताइए।

हे राजन्। तुम पूर्वभव में राजा यशोधर के पुत्र थे।

एक समय तुम किसी राजहंस के बच्चे को खेलने के लिए उठा लाए। पिता ने उसे छोड़ने के लिए तुम्हें जब बहुत समझाया, तो तुम संसार से उदासीन हो गए। और दिगंबर मुनि बन गए। फिर तुम्हारी आठों पत्नियों ने भी आर्यिका व्रत ग्रहण किए। फिर तुमने यहां जन्म लिया और वे आठों पत्नियां भी तुम्हें मिल गईं।

जीवंधर महाराज वापस अपने राजमहल में पहुंचे और गंधर्वदत्ता के पुत्र को राज्य सौंपकर आठों पत्नियों सहित भगवान महावीर के समवसरण में आ पहुंचे।

हे भगवन्। मैं इस संसार में जन्म और मरण रूपी रोग से भयभीत हूं। मेरी इस पीड़ा को दूर करें।


भगवान महावीर ने उन्हें दीक्षा लेने की अनुमति दे दी। तब उन जीवंधर महाराज ने भी महावीर स्वामी के निकट घोर तपश्चरण किया।
और अन्त में केवलज्ञान प्राप्त करके श्री जीवंधर स्वामी ने मोक्ष प्राप्त किया।

इति शुभम्


राहुल और दीपू लड़ाई का घर
अरे राहुल, क्यों लड़ रहे हो ?
मम्मी ! दीपू ने मेरी कॉमिक्स छीन ली।
तुम लोग लड़ाई का घर क्यों लाते हो ?
मम्मी ! मुझे तो मेरे दोस्त ने दी
वापिस कर दो उसे लड़ाई मिट जायेगी
नहीं, पहले मैं उसे पूरी पढ़ूंगा।
पापा का प्रवेश
लो बेटे ! यह जैन कॉमिक्स जिससे कुछ ज्ञान हो।
पापा ! मम्मी तो कहती है कि कॉमिक्स लड़ाई का घर है।
नहीं बेटा ! जैन कॉमिक्स पढ़ने से लड़ाई मिटती है।
पापा ! कॉमिक्स पढ़ने से लड़ाई कैसे मिटती है?
बेटा ! जैन धर्म लड़ना नहीं प्रेम करना सिखाता है। इसका जैन कॉमिक्स में वर्णन है।
तब तो हम जैन कॉमिक्स रोज पढ़ेंगे पापा जी।
सरल शिक्षा का एक विचार, जैन कॉमिक्स का हो प्रचार


राहुल और दीप
शिक्षा किसने दी
राहुल! देखो मैं गोली खा रहा हूं
अरे! यह तो बतख के आकार की है इसे मत खा!
क्या मेरी बतख पर तुम्हारी जीभ में भी पानी आ गया?
नहीं, किसी प्राणी के आकार वाली वस्तु नहीं खाना चाहिए।
क्यों यह तो निर्जीव है?
नहीं, इसे खाने से पाप लगता है
तुम्हें कैसे मालूम
सुनो, एक राजा ने निर्जीव आटे का मुर्गा बलि में चढ़ाया था उसे बहुत दुःख उठाने पड़े।
यह तुमने कहां से पढ़ लिया?
देख इस जैन कॉमिक्स 'आटे का मुर्गा' में
तभी तो फायदा है 'जैन कॉमिक्स' पढ़ने का।
तब तो हम भी जीवों के आकार वाली वस्तुएं नहीं खायेंगे
सरल शिक्षा का एक विचार- जैन कॉमिक्स का हो प्रचार

आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थमाला से प्रकाशित साहित्य

आपके परिवार के लिए अति ही उपयोगी साहित्य एवं जैन चित्र कथा

क्र.	ग्रन्थ का नाम	मूल्य	क्र०	ग्रन्थ का नाम	मूल्य
1.	तीन दिन में	20.00	33.	मंत्र महाविज्ञान	60.00
2.	भाग्य की परीक्षा	20.00	34.	ज्योतिष विज्ञान	60.00
3.	आटे का मुर्गा	20.00	35.	कर विज्ञान	30.00
4.	जो करो सो भरे	20.00	36.	साधु परिचय	50.00
5.	कवि रत्नाकर	20.00	37	वरांग चरित्र	50.00
6.	चमत्कार	20.00	38	बोलती माटी	250.00
7.	प्रद्युमन हरण	20.00	39	आखन देखी आत्मा	60.00
8.	सत्यघोस	20.00	40.	जैन ज्योतिष महाविज्ञान	160.00
9.	सात कोड़ियों में	20.00	41.	भक्तामर सचित्र हिन्दी,	
10.	टीले बाबा की	20.00		अंग्रेजी, गुजराती	750.00
11.	चन्दनबाला	20.00	42.	अभय कुमार	20.00
12.	ताली एक हाथ से बजती रही	20.00	43.	भजन रत्नाकर	35.00
13.	सिकन्दर और कल्याण मुनि	20.00	44.	रत्नाकर की लहरें	250.00
14.	चारित्र चक्रवर्ति	20.00	45.	दर्शन विधि	5.00
15.	रुप जो बदलता नहीं जाता	20.00	46.	जिन पूजा	5.00
16.	राजुल–हिन्दी–अंग्रेजी	20.00	47.	विमल भक्ति	10.00
17.	स्वर्ग की सीढ़ी	20.00	48.	आचार्य धर्मसागर पूजाञ्जलि	31.00
18.	मुनि रक्षा	20.00	49.	सज्जन चित्त बल्लभ	10.00
19.	मुक्ति का राही	20.00	50.	कमल श्री नाटक	10.00
20.	महादानी भामाशाह	20.00	51.	पंचकल्याणक	20.00
21.	प्रतिशोध	20.00	52.	समोसरण विधान	35.00
22	अभय कुमार	20.00	53.	अनासक्त योगी	30.00
23.	चेलना की विजय	20.00	54.	गेटवे ऑफ जैन धर्म	30.00
24.	पद्मावती देवी	20.00	55.	बाल भाग 1-2-3-4-5	25.00
25.	गाये जा गीत अपन के	20.00	56.	अनोखी कथाऐं 1 से 10 तक	20.00
26.	बाहुबली	20.00	57.	छह ढाला	10.00
27.	पारसनाथ	20.00	58.	शान्ति विधान	25.00
28.	भावना का फल	20.00	59.	नवग्रह विधान	20.00
29.	भगवान राम	25.00	60.	वास्तु विधान	20.00
30.	आओ बच्चों गाये गीत	20.00	61.	मृत्युंजय विधान	20.00
31.	साधना और सिद्धि	70.00	62.	दश लक्षण विधान	20.00
32.	ज्ञान विज्ञान	30.00			

प्राप्ति स्थान :– जैन मन्दिर गुलाब वाटिका लोनी रोड, दिल्ली फोन :– 0575-4600074



स्व० जगाती लक्ष्मीचंद जैन व ब्र० धर्मचंद शास्त्री

सहयोगी

स्व० श्री जगाती लखमीचंद जैन

टड़ा (के०) सागर म०प्र०

Processed & Printed by: Shiva Enterprises. Tel.: 2128692